"एक परिसर–एक शाला"

गुणवत्तायुक्त शिक्षा का अभिनव प्रयास

म.प्र. शासन स्कूल शिक्षा विभाग मंत्रालय वल्लभ भवन भोपाल एक परिसर एक शाला के तारतम्य में पत्र क्रमांक/एफ 44–19/2018/20–2/भोपाल दिनांक 05/09/2018 के अनुसार इस **संस्था नेताजी सुभाषचंद्र बोस शास.उ.मा.वि. सिवनी जिला–सिवनी** में विभाग द्वारा एक ही परिसर में संचालित विभिन्न स्तर/सामान्य स्तर की शालाओं को जिसमें सम्मिलित शालाऐं शास.हिन्दी मेन बोर्ड प्राथ.शाला सिवनी एवं नेताजी सुभाषचंद्र बोस माध्य.शाला सिवनी को एकीकृत करते हुए एक शाला के रूप में नेताजी सुभाषचंद्र बोस शास.उ.मा.वि.सिवनी के नाम से संचालित है।

एक परिसर–एक शाला के क्रियान्वयन में सफलतम रूप से निम्नानुसार लाभ प्राप्त हो रहे है, जिससे सभी स्तर के अध्ययनरत छात्रों की शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार चिन्हित किया जा रहा है। जिसका की बिन्दुवार क्रियान्वयन इस प्रकार है।

1– शैक्षणिक उपलब्धता का बेहतर समन्वयन :– जब से इस शाला में एकीकृत विद्यालय की अवधारणा एक परिसर–एक शाला के रूप में सुनिश्चित की गई है। तब से विद्यालय में कार्यरत शैक्षणिक अमले का उपयोग बखूबी किया जा रहा है। एकीकृत समय सारणी बनाकर सम्मिलित शालाओं यथा प्राथमिक स्तर से उच्चतर माध्यमिक स्तर तक उपलब्ध शिक्षकों की योग्यता एवं क्षमता के अनुसार कालखण्ड आबंटित किया गया है। सभी वर्ग के शिक्षकों की शिक्षक बैठक व्यवस्था एकीकृत की गई है जिससे प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षकों पदांकन के आधार पर जो अन्य उपलब्धता थी उसका निराकारण इस अवधारणा के माध्यम से किया गया है। एकीकृत रूप से शिक्षकों की शैक्षणिक योग्यता एवं कार्यक्षमता एक नजर में परिलक्षित हो जाने के फलस्वरूप सम्पन्न किये गये शैक्षणिक कार्यों में बेहतर समन्वय स्थापित हुआ है, जिसका प्रत्यक्ष लाभ हर स्तर से छात्रों को हुआ है। अध्यापन कार्य की नियमित समीक्षा और निर्धारित मापदण्ड के अनुसार अध्यापन कार्य बेहतर हुआ है। एक ही परिसर में समस्त शिक्षकों की उपलब्धता होने के कारण आगामी कार्ययोजना का निरंतर विकास किया जा रहा है।

2– प्रशासनिक उत्तरदायित्व में सुधार :–

एक परिसर–एक शाला अंतर्गत अध्यापन कार्य की गुणवत्ता में निरंतर सुधार देखा गया है। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि, कर्त्तव्यों के प्रति लापरवाह शिक्षकों को सतत् अनुशासनात्मक कार्यवाही की चिन्ता बनी रहती है। अतः वह नियमों के अधीन अनुशासनात्मक रूप से अपने–अपने कार्यों को संलग्न रखे है। शैक्षणिक कार्य में किसी भी प्रकार की आ रही

बाधा एवं शिकायत का त्वरित निराकरण भी एक परिसर एक शाला की अवधारणा से संभव हुआ। परिसर में उपलब्ध समस्त प्रकार के संसाधनों का उपयोग सुनिश्चित किया जा रहा है। परिसर की आवश्यकता एवं उपलब्धता में विभिन्नता भी चिन्हित की जा रही है। चिन्हित होने के उपरान्त इसका निराकरण हेतु निवेदन वरिष्ठ कार्यालय से किया जा रहा है। सभी बच्चों को सीखने का समान अवसर मिलें, तनवामुक्त वातावरण मिलें एवं खेलकूद के साधनों का समुचित उपयोग कर बच्चों में शारीरिक एवं मानसिक सुदृढ़ता का निरंतर विकास किया जा रहा है। एक परिसर एक शाला के प्रादुर्भाव से विद्यालय की प्रशासनिक व्यवस्था के आधार पर प्राचार्य के द्वारा छात्रों के हित में विषय विशेषज्ञों के अनुसार अध्यापन कार्य पूर्ण कराने की स्वतंत्रता प्राप्त हुई है जिससे प्राचार्य के माध्यम से ऐसे शिक्षक जिनके द्वारा शैक्षणिक स्तर में लापरवाही प्रदर्शित करने पर उन उच्च पद के शिक्षकों को प्राथमिक या माध्यमिक विभाग में उपयोग किया जा सकता है तथा उनके स्थान पर प्राथमिक स्तर से उच्च शैक्षणिक योग्यता एवं प्रतिभाशाली शिक्षकों का उपयोग उच्च स्तर पर किया जा सकता है साथ ही विद्यालय हित में प्राचार्य के माध्यम से विद्यालयीन व्यवस्था में जैसे– पेयजल, सेनिटेशन, स्वच्छता आदि की व्यवस्था किसी भी मद से किया जा सकता है।

3– पर्याप्त कक्षों की व्यवस्था :– हाईस्कूल/हायर सेकेण्डरी स्तर पर जिलें में भवन व्यवस्था की कमी एक प्रमुख बिन्दु है। एक परिसर–एक शाला की अवधारणा परिलक्षित होने पर इस विद्यालय में भी जो कक्षों की कमी के कारण अध्यापन कार्य प्रभावित हो रहा था। इस अवधारणा के कारण प्राथमिक विभाग के कक्ष प्राप्त हो जाने पर शैक्षणिक व्यवस्था एवं प्रयोगशाला हेतु कक्षों की कमी की पूर्ति की जा सकी है जिससे छात्र स्वस्थ्य वातावरण में अध्यापन प्राप्त कर रहे है साथ ही भवन संबंधी अन्य व्यवस्थाओं का निराकरण इसके अंतर्गत किया जा सका है।

4– सांस्कृतिक एवं साहित्यिक अन्य गतिविधियाँ :– इस योजना के क्रियान्वयन के पश्चात् सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन गतिविधि के अंतर्गत प्राथमिक से हायर सेकेण्डरी तक ऐसे प्रतिभागी छात्र जो गायन–वादन, पेन्टिग, खेलकूद एवं अन्य गतिविधि में मंच में आकर अपनी प्रतिभा को संकोचवश प्रदर्शित नही कर पाते थे। बालसभा आदि के माध्यम से अपनी प्रतिभाओं को प्रदर्शित कर रहे है। छात्र प्रतिभाओं के माध्यम से राज्यस्तर तक साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों में स्थान प्राप्त कर विद्यालय का नाम गौरवान्वित कर रहे है।

5– शाला प्रबंधन समिति :– एकीकृत विद्यालय जिसमें हाईस्कूल/हायर सेकेण्डरी के साथ प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों का एकीकरण होने के कारण इनमें शाला प्रबंध परिषद का गठन कर साधारण सभा के अंतर्गत प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय की प्रबंधन समिति के सभी सदस्य तथा हाईस्कूल एवं हायर सेकेण्डरी शाला की प्रबंधन एवं विकास समिति के समस्त सदस्यों को सम्मिलित किये जाने के कारण शाला में अधिक नामांकन, शाला की भौतिक सुविधाओं एवं अध्यापन व्यवस्था में सतत् प्रगति परिलक्षित हुई है।

6– परीक्षा परिणाम उत्तरोतर विकास के प्रयास :– इस योजना के क्रियान्वयन से प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर के छात्र–छात्राओं का एक ही परिसर में अध्यापन एवं अन्य गतिविधियों में शामिल होने के कारण छात्रों का मानसिक शैक्षणिक, सृजनात्मक गतिविधियों में विकास हो रहा है जिससे आगामी सत्र के परीक्षाफल में उत्तरोत्तर वृद्वि हुई है तथा हाईस्कूल एवं हायर सेकेण्डरी के परीक्षा परिणाम भी बेहतर प्राप्त होने की नवीन आशा का संचार हुआ है। इससे

निष्कर्ष :– एक परिसर–एक शाला के तहत शैक्षणिक कलैण्डर के अनुरूप परिसर के समस्त विद्यार्थिओं की सर्वांगीण विकास के लिए एकीकृत शैक्षणिक व्यवस्था, पाठ्योत्तर गतिविधि, खेलकूद व्यवस्था एवं अन्य रोचक गतिविधियों में सुदृढ़ता परिलक्षित हो रही है। विदयालय के छात्र/छात्रा अनेक गतिविधियों में अपना परचम लहरा रहे है।

सफलता की कहानी एक परिसर–एक शाला
शासकीय अहिल्या आश्रम कन्या उ.मा.वि. क्रं.01
पोलो ग्राउंड, इन्दौर

म.प्र शासन स्कूल शिक्षा विभाग एक ही परिसर में संचालित विभिन्न स्तरों/सामान्य स्तरों की शालाओं को एकीकृत कर एक शाला के रूप में संचालित किये जाने के निर्णय से शालाओं में शैक्षणिक क्षेत्र में/गुणवत्ता स्तर/अकादमिक स्तर एवं अन्य क्रियाकलापों/गतिविधियों में सफलता के एक नये अध्याय की शुरूआत हुई है।

एकीकृत शाला के क्रियांवयन से प्रशासनिक स्तर पर प्रभावी नियंत्रण, शिक्षा में गुणवत्ता के स्तर में वृद्वि, शिक्षकों एवं भौतिक संसाधनों का अधिक से अधिक उपयोग एवं शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित हो सकी है।

शाला में प्राथमिक/माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को भी उच्च स्तर के विद्यार्थीयों के अनुरूप विभिन्न प्रकार की प्रयोगशाला का भम्रण एवं अन्य गतिविधियों मे उच्च स्तर के विद्यार्थियों के साथ–साथ सहभागिता करने से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का भाव ओर अधिक मजबूत हुआ है।

एक परिसर–एक शाला के क्रियान्वयन का प्रभाव– अभिभावक श्रीमती विनिता सिसोदिया जिनकी दों बेटियां है, वे अपनी बड़ी बेटी को हायर सेकेण्डरी स्कूल में कक्षा 9वीं में प्रवेश दिलाना चाहती थी एवं अपनी छोटी बेटी को कक्षा 6वीं में प्रायवेट स्कूल में प्रवेश दिलाना चाहती थी, क्योकि उनकी नजर में शासकीय प्राथमिक/माध्यमिक विद्यालय का स्तर कमतर था, लेकिन उनसे विद्यालय की अकादमिक प्रभारी एवं व्याख्याता श्रीमती सुनयना शर्मा ने समक्ष में चर्चा करते हुए शासन की अभिनव पहल एक परिसर–एक शाला अंतर्गत विभिन्न आयामों एवं हुए परिर्वतनों का परिचय कराया ओर विनिता इस जानकारी से संतुष्ट होकर अपनी छोटी बेटी को भी शाला में प्रवेश दिलाने के लिये सहमत हो गई। ऐसे एक ही नही अनेक उदाहरण एक परिसर–एक शाला की सफलता के आयाम लेकर सामने आ रहें।

एक परिसर–एक शाला के क्रियान्वन से प्राथमिक/माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के साथ–साथ हायर सेकेण्डरी स्तर के विद्यार्थियों को भी एक नया सुखद अनुभव हुआ है, सांस्कृतिक, साहित्यिक, खेल गतिविधियों के

साथ–साथ राष्ट्रीय पर्व एवं शासकीय आयोजनों जैसे विज्ञान मेला, कला उत्सव, बाल रंग, आदि में साथ में भागीदारी करते हुए विभिन्न प्रस्तुतियों में सहभागीता करना उन्हें सुनहरे भविष्य की ओर सकारात्मक विषय में बड़ने का होसला प्रदान कर रहा है।

एक परिसर–एक शाला के अंतर्गत प्राथमिक से लेकर हायर सेकेण्डरी के स्तर तक के विद्यार्थी भाईचारे की भावना के साथ अपने विचार, अपनी कला, अपनी समस्या को एक दूसरे के साथ बाटते हुए अपने जीवन के लक्ष्यों पर भी चर्चा कर रहे है।

एकीकृत शाला के अंतर्गत प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को जीवन कौशल शिक्षा के महत्वपूर्ण पहलूओं से रूबरू करवाते हुए उन्हें उमंग मॉड्यूल की गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक, नैतिक, संस्कारयुक्त शिक्षा प्रदान करना भी एक सकारात्मक दिशा में अभिनव प्रयास सिद्व हो रहा है।

एक परिसर–एक शाला के क्रियान्वन से सिर्फ विद्यार्थी ही नही अपितु प्राथमिक/माध्यमिक/हायर सेकेण्डरी विद्यालय का समस्त स्टाफ एक परिवार के समान एक साथ उठते बैठते हुए अपने विचारों को एक दूसरें के साथ बाटने लगा है, इस योजना में उनके बीच की एक अनकही दूरी को खत्म कर सोहार्दपूर्ण वातावारण निर्मित किया है। प्रशासनिक दृष्टि से भी योग्यता अनुसार शिक्षकों का अध्यापन कार्य हेतु आदान प्रदान होना अकादमिक स्तर के उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन कर रहा है।

एक परिसर–एक शाला की सफलता की कहानी में एक नया आयाम ओर जोड़ने का प्रयास किया गया जब हायर सेकेण्डरी स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षणिक भ्रमण के अनुरूप प्राथमिक/माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को भी अग्निबाण प्रेस, बी.एस.एन.एल ऑफिस एवं नेहरू पार्क जैसे स्थलों पर शैक्षणिक भ्रमण कराया गया जहा विद्यार्थियों ने अखबारों की छपाई प्रकिया टेलिफोन मशीनों की विभिन्न जानकारीयां एवं पर्यावरण संबधित विभिन्न जानकारीयां प्राप्त की।

एक परिसर–एक शाला क्रियान्वयन के तहत शासकीय अहिल्या आश्रम कन्या उ.मा.वि. क्रं.–01 इन्दौर जिले का एक ऐसा विद्यालय है जो कि KG1 कक्षा से लेकर कक्षा 12वीं तक अंग्रेजी माध्यम का शासकीय विद्यालय बन चुका है।

उपरोक्त सभी बिन्दु एवं कहानी एक परिसर–एक शाला के सकारात्मक प्रभाव एवं सफलता को बयां कर रहे है। एक परिसर–एक शाला शासन की महत्वपूर्ण योजना है आने वाले भविष्य में इस योजना के ओर सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित होगे।

एकीकृत शा.कमला नेहरु कन्या उ.मा.वि.जावरा
जिला रतलाम म.प्र.

मध्य प्रदेश शासन स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा किया गया यह अभिनव प्रयास धरातल पर क्रियान्वयित होने के साथ ही इसके सकारात्मक परिणाम द्रष्टिगोचर होने लगे है। इसी तारतम्य में रतलाम जिले की जावरा तहसील स्थित शा.कमला नेहरु कन्या उ.मा.वि.जावरा को एक श्रेष्ठ उदहारण मन जा सकता है।

प्रशासनिक दृष्टि से एस योजना का लाभ यह हुआ की परिसर में स्थित प्रा.वि. एवं मा. वि. के स्टाफ, कक्ष एवं संसाधनों के एकीकरण के फलस्वरूप समूचा परिसर एक ही समय विभाग चक्र का पालन कर रहा है। वही उपलब्ध स्टाफ एवं संशाधनो का उपयोग समूचे परिसर के लिए हो पा रहा है। इससे एक लाभ यह भी हुआ है कि विभाग द्वारा समय समय पर प्रदत्त आदेशो एवं निर्देशों का प्रभावी रूप से पालन किया जा रहा है। प्राचार्य के द्वारा उपलब्ध मानव संसाधन का उनकी क्षमता एवं योग्यता अनुसार श्रेष्ठ नियोजन किया जा रहा है।

अकादमिक द्रष्टि से यह अत्यंत लाभप्रद सिद्ध हुआ है। परिसर की उ.मा.वि.कक्षाओ का विषय अध्यापन प्रा.वि. एवं मा.वि. के शिक्षकों यथा श्रीमती फ़ातेमा दलाल (उर्दू, अंग्रेजी), श्रीमती निकिता धुलिया (हिंदी, सा.वि.), श्री राजेंद्र सोनी (राजनीती, सा.वि.) किया जा रहा है, वही उ.मा.वि. के शिक्षकगण मा.वि., प्रा.वि. में गणित, अंग्रेजी जैसे विषयों का अध्यापन करवा रहे है। इसी का सकारात्मक परिणाम है कि जहा एक ओर उ.मा.वि.कक्षाओ का परीक्षा परिणाम श्रेष्ठ रहा है। वही प्रा.वि. तथा मा.वि. कक्षाओ के छात्र योग्य शिक्षकों के द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त कर रहे है।

विभागीय योजनाओ का प्रभावी क्रियान्वयन भी इस व्यवस्था के कारण ही हो पा रहा है। छात्रवृत्ति, गणवेश, सायकिल वितरण, करियर काउंसलिंग एवं अन्य सभी योजनाओ के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी उ.मा.वि., मा.वि. एवं प्रा.वि. में पदस्थ स्टाफ सदस्यों द्वारा संयुक्त रूप से निर्वाह की जा रही है।

इस योजना ने परिसर की आधारभूत संरचना को सुद्रद किया है। कक्षों की उपलब्धता बढ़ी है। पेयजल, शोचालय, खेल सामग्री, खेल मैदान एवं अन्य संसाधनो के साझा प्रयोग से परिसर की उ.मा.वि.,मा.वि.एवं प्रा.वि, तीनो इकाईया सामान रूप से लाभान्वित हो रही है।

विद्यार्थियों को इससे लाभ यह हुआ कि उन्हें कक्षा 1 से ही पठन–पाठन के उस वातावरण का लाभ प्राप्त होने लगा है, जो पूर्व में उन्हें 8वी–9वी के बाद प्राप्त होना था द्यएक स्थान पर प्रार्थना–सभा योग, सुविचार आदि की गतिविधिया कक्षा 1ली से 12वीं तक के विद्यार्थियों को समान रूप से लाभन्वित कर रही है।

एक परिसर एक शाला हाईस्कूल जूनापानी

NEEMUCH (M.P.)

विशेष प्रयासों से सफलता

नीमच जिला अन्तर्गत शा. हाईस्कूल जूनापानी, में कक्षा 10वीं का परीक्षा परिणाम विगत पॉच वर्षो से 100प्रतिशत रहा है। प्राचार्य श्री बी.एल. बसेर तथा समस्त शिक्षकों ने विद्यालय परिणाम 100प्रतिशत के साथ समस्त बच्चों को प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने की रणनीति बनाई। विद्यालय के छात्रों का मासिक टेस्ट बोर्ड पेटर्न पर लिया जाता है। एवं अभिलेखों का संधारण किया जा कर छात्रों की विषयवार एवं कक्षावार रेंक निकाली जाती है। पालकों को विद्यालय मे बुलाकर छात्र की रेंक से अवगत कराया जाता है तथा अलग–अलग छात्र को बुलाकर उनसे व्यक्तिगत रुप से चर्चा कर अपनी रेंक सुधारने हेतु प्रेरित किया जाता है। साथ ही सार्वजनिक रुप से यह घोषणा भी की जाती है कि जिस छात्र की रेंक अगले मासिक टेस्ट मे सुधरेगी उसे सम्मानित किया जायेगा।

छात्रों के मोटिवेशन एवं प्रतिस्प्रधा के लिये यह भी घोषणा की गयी कि जो छात्र सर्वाधिक अंक लायेगा उसे परिवार सहित 15 अगस्त पर ससम्मान आमंत्रित कर उससे झण्डावंदन करवाया जायेगा। 15 अगस्त पर विगत तीन वर्षो से छात्र द्वारा झण्डावंदन करवाया गया है। उक्त प्रक्रिया को अपनाने का परिणाम यह हुआ है कि पिछले दो वर्षो से शत प्रतिशत छात्र प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुवे।

हाईस्कूल परिसर में मा.वि. एवं प्रा.वि. भी संचालित है। पिछले 5–6 वर्षो से सभी विद्यालय एक साथ ही संचालित हो रहे है, एक समय सारणी के अनुसार हाईस्कूल के अध्यापक मा.वि. में तथा मा.वि. के अध्यापक हाईस्कूल में भी संबंधित विषय का अध्यापन कराते रहे है। इससे विषयवार अध्यापको की कमी नहीं रही, प्रत्येक विषय पर बच्चों समस्या दूर होती रही है। सभी गतिविधियॉ एक साथ संचालित की जाती रही है।

वर्ष 2018 भी 10वी बोर्ड मे सर्वाधिक अंक प्राप्त छात्र दिलीप सत्यनारायण से झण्डावंदन करवाया गया। 15 अगस्त वर्ष 2016 पर छात्रा कुमारी संजु मालवीय एवं 15 अगस्त 2017 को छात्र लालाराम धनगर द्वारा झण्डावंदन करवाया गया।

विगत पांच वर्षो के 10 बोर्ड परीक्षा की संख्यात्मक जानकारी												
क	वर्ष	कक्षा	कुल छात्र	उत्तीर्ण	प्रतिशत	कुल प्राप्तांक	औसत अंक	औसत प्रतिशत	I	II	III	TOTAL
1	2014	10	14	14	**100**	5196	371	62	**6**	**5**	**3**	**14**
2	2015	10	26	26	**100**	9115	351	58	**12**	**11**	**3**	**26**
3	2016	10	29	29	**100**	11299	390	65	**22**	**7**	**0**	**29**
4	2017	10	24	24	**100**	9951	415	69	**24**	**0**	**0**	**24**
5	2018	10	21	21	**100**	7832	373	75	**21**	**0**	**0**	**21**
योग			**114**	**114**	**100**	**43393**	**381**	**63**	**85**	**23**	**6**	**114**

मिलाए तो तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा मैदान।

मनाया स्वतंत्रता दिवस

जूनापानी में कराया बच्चों से झंडा वंदन

ग्राम जूनापानी में स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। यहां के हाई स्कूल प्राचार्य बीएल बसेर ने विगत 4 वर्षों से 100 प्रतिशत रिजल्ट दिया है। यहां प्रतिभावान छात्रों को प्रोत्साहन देने के लिए स्कूल में सर्वाधिक अंक लाने वाले छात्र लालाराम धनगर से झंडा वंदन कराया। यहां गत वर्ष भी शाला में सर्वाधिक अंक लाने वाली छात्र संजू मालवीय ने ध्वजारोहण किया था।

प्रतिवर्षानुसार बरलाई में स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया। शासकीय भवनों पर रोशनी की गई। वहीं प्रातः 7.30 बजे सभी शासकीय व अशासकीय शिक्षण संस्थानों के बच्चों द्वारा प्रभातफेरी निकाली गई। मुख्य समारोह शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्रागंण पर प्रातः 9 बजे सरपंच गुड्डीबाई पाटीदार द्वारा झंडा वंदन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया था।

स्वच्छ रहे ... स्वस्थ रहे ... स्वच्छ भारत अभियान डाईस् कोड : 23180511405

कार्यालय शासकीय हाई स्कूल जुनापानी

10 वीं बोर्ड 2016 प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण विद्यालय के गौरव

संजु,83 प्रति.

प्रहलाद,81 प्रति.

पवन,80 प्रति.

रविना,79 प्रति.

पिंकी,77 प्रति.

ओमप्रकाश,72 प्रति.

पप्पु,70 प्रति.

दशरथ,70 प्रति.

विष्णु,69 प्रति.

अर्पित,67 प्रति.

माया,66 प्रति.

माया,66 प्रति.

सपना,66 प्रति.

दशरथ,65 प्रति.

विकास नाथ,65 प्रति.

नवीन,64 प्रति.

मनीष,63 प्रति.

काजल,62 प्रति.

लोकेश,62 प्रति.

उर्मिला,61 प्रति.

राहुल,60 प्रति.

राहुल,60 प्रति.

नवाचार

पांच साल से जूनापानी के सरकारी हाईस्कूल का परिणाम 100 प्रतिशत, 12 से अधिक गांव के विद्यार्थी कर रहे हैं पढ़ाई

क्लास में शत-प्रतिशत उपस्थिति तय की, हर माह बोर्ड परीक्षा की तरह टेस्ट लिए, लगातार दूसरे साल भी सारे विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में हुए पास

विवेक सोनी | नीमच

नीमच-रामपुरा रोड पर बसा छोटा सा गांव जूनापानी। आबादी सवा सौ। एक सरकारी हाईस्कूल हैं जहां 12 गांव के बच्चे पढ़ते हैं। स्कूल में हर महीने बोर्ड परीक्षा की तरह टेस्ट होते हैं। विद्यार्थियों के मन से बोर्ड परीक्षा का भय दूर किया जाता है। इसका परिणाम यह रहा कि दो वर्ष से स्कूल के सभी विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में पास हो रहे हैं। पांच साल से परीक्षा परिणाम भी 100 प्रतिशत आ रहा है।

बीएल बसेर, प्राचार्य

यह सुधार आया प्राचार्य बीएल बसेर के कुशल प्रबंधन और विशेष योजना से। उन्होंने योजना के चार आधार बनाए और परिणाम सुधारने की कवायद शुरू की। 2014 से पहले संस्था का परीक्षा परिणाम 50 फीसदी के आसपास और प्रथम आने वालों की संख्या कम रहती थी, लेकिन अब स्थिति इससे उलट है। छात्र मोहनलाल के अनुसार यदि कोई छात्र स्कूल नहीं आता है तो प्राचार्य परिजन से कहते हैं तुमने हमारे बच्चे को स्कूल आने से क्यों रोका है। इससे अब परिजन किसी काम के लिए बच्चों को घर पर नहीं रोकते। रोज स्कूल जाने से परिणाम में सुधार आया है। अब स्कूल में आसपास के अन्य स्कूल के विद्यार्थी भी प्रवेश के लिए आवेदन करने लगे हैं।

यह किया तो आए सुखद परिणाम

- हर महीने बोर्ड पैटर्न पर परीक्षा ली
- विद्यार्थियों व शिक्षकों को मोटीवेट किया।
- स्कूल में समय पर सभी की उपस्थिति तय की।
- रोज बच्चों की हाजिरी मोबाइल पर अपडेट की।
- अंडरग्राउंड प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया।
- स्कूल में कोई विद्यार्थी अनुपस्थित रहता तो प्राचार्य फोन कर परिजन से चर्चा करते हैं।
- विद्यार्थी से अकेले में चर्चा कर उसे अपने साथी से अधिक नंबर लाने के प्रोत्साहित किया।
- हर 10 दिन में रिक्त स्थान वाले 500 प्रश्न बच्चों से हल कराए जाते हैं।
- जो बच्चे कमजोर रहते हैं उन पर विशेष ध्यान देकर पढ़ाया जाता है।
- जिस शिक्षक के विषय में बच्चे कमजोर हैं, उन्हें भी अच्छी पढ़ाई के लिए समझाइश दी जाती है।

चार साल में ऐसे आया रिजल्ट में सुधार

वर्ष	परीक्षा दी	परिणाम
2014	14	6 प्रथम, 5 द्वितीय, 3 तृतीय
2015	26	12 प्रथम, 11 द्वितीय, 3 तृतीय
2016	29	22 प्रथम, 7 द्वितीय
2017	24	सभी प्रथम श्रेणी में
2018	21	सभी प्रथम श्रेणी में।

जो प्रथम आएगा वह करेगा इंडावंदन

स्कूल का नियम है जो विद्यार्थी बोर्ड परीक्षा में प्रथम रहता है वह 15 अगस्त को स्कूल परिसर में ध्वजारोहण करता है। इस बार 92 फीसदी अंक प्राप्त करने वाले सत्यनारायण इंडावंदन करेंगे। यह तीसरा वर्ष है जब इंडावंदन सर्वाधिक अंक प्राप्त विद्यार्थी करेगा। स्कूल का इस वर्ष अन्य कक्षाओं का परिणाम 100 फीसदी है।

आवेदन प्रस्तुत किए।

परीक्षा परिणाम रहा सौ फीसदी

नीमच @ पत्रिका. रामपुरा मनासा मार्ग पर स्थित जूनापानी के हाई स्कूल का 10वीं बोर्ड का परिणाम इस वर्ष भी 100 फीसदी रहा। इस वर्ष भी विशेष उपलब्धि यह रही कि सभी बच्चे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। इस विद्यालय में लगभग सभी बच्चे बाहर गांव से आते हैं। विद्यालय के प्रभारी प्राचार्य बीआरसीसी बीएल बसेर ने बताया कि इस वर्ष 10वीं कक्षा में 21 बच्चे अध्ययनरत थे। सभी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। इसमें नई ननोर के छात्र सत्यनारायण ने 92 प्रतिशत एवं मोहनलाल 91 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। प्राचार्य बसेर ने बताया कि पूर्व घोषणा अनुसार प्रतिवर्ष सर्वाधिक अंक लाने वाले छात्र द्वारा 15 अगस्त पर झंडावंदन किया जाता है। इस वर्ष सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र सत्यनारायण द्वारा झंडा वंदन किया जाएगा।

माहेनूर को 88

हाई स्कूल जूनापानी का परीक्षा परिणाम सौ प्रतिशत रहा

मनासा। शिक्षको का जुनून होतो वह अपने विद्यालय मे अध्यनरत विद्यार्थियो का भविष्य बंनाने मे कोई कोर कसर नही छोड़ते यह बात जूनापानी के हाईस्कूल के प्राचार्य बी एल बसेर जो की बीआर सीसी के प्रभारी का दायित्व भी संभाले हुये ने अपने स्टाफ की मदद से स्कूल की कक्षा 10 वी का परीक्षा परिणाम लगातार 5 वे वर्ष भी 100 फीसदी रखमे कामयाब रहे जो एक उपलब्धि तो है ही साथ ही उन लोगो को भी प्रेरणा देगा जो अपने कार्यक्षेत्र मे लापरवाही बरतते है।

वर्तमान समय मे एक ओर जहां प्रायवेट स्कूलो के चलन व प्रतिस्पर्धा के बढ़ते दौर मे लोगो का अपने बच्चो को अच्छी शिक्षा के लिये प्रायवेट स्कूलो पर बढ़ते भरोसे के बीच जूनापानी का शासकीय हाईस्कूल एक मिसाल बनेगा । जिसके लिये वहा का पूरा स्टाफ बधाई का पात्र है। मनासा से रामपुरा जाने वाले मार्ग के बीच स्थित एक छोटी सी बसाहट जूनापानी के हाईस्कूल का 10 वी बोर्ड परीक्षा का परिणाम इस वर्ष भी 100 प्रतिशत रहा है। इस वर्ष भी विशेष उपलब्धि यह रही कि सभी बच्चे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। इस विद्यालय में लगभग सभी बच्चे बाहर गांव से आते हैं। इस विद्यालय के प्राचार्य बी एल बसेर है जिनके पास बीआरसीसी का भी अतिरिक्त प्रभार है। इस वर्ष 10 वी मे 21 बच्चे अध्यनरत थे जो सभी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। सर्वाधिक अंक सत्यनारायण नई ननोर 92 प्रतिशत व मोहनलाल नई ननोर 91प्रतिशत को मिले। विद्यालय के शिक्षकों की इस मेहनत पर पालको एव नागरिकों ने विद्यालय परिवार को बधाइयां दी। बी एल बसेर प्राचार्य ने बताया कि इस वर्ष 15 अगस्त पर झंडा वंदन सर्वाधिक अंक प्राप्त बालक सत्यनारायण करेगा। यह तीसरा वर्ष है जहाँ झंडा वंदन सर्वाधिक अंक प्राप्त बालक करता है।

''अल्प समय में शाला विकास''
(शा.उ.मा.वि. अठाना, जिला–नीमच)
सत्र 2018–19

छोटे–छोटे कक्षा कक्ष, अंधेरे युक्त कक्ष में पर्याप्त खिड़किया एवं रोशनदान नही, कक्ष में 40–50 छात्र–छात्राए जब कक्षा–कक्ष में बैठते थे तो कक्षा कक्ष से उष्ण हवा के झोके बाहर निकलते थे। वर्षा ऋतु में प्रायः सभी कक्ष पानी से टपकते थे। यहां तक कि शाला का रिकार्ड भी पानी में भीग जाता था। शाला प्रांगण नही के बराबर, शाला के छात्र–छात्राओं को घूमने, टहलने, खेलने आदि के लिए पर्याप्त स्थान नहीं, शौचालय एवं यूरिनल अपर्याप्त। ऐसी स्थिति थी हमारी शाला शा.उ.मा.वि. अठाना की सत्र 2017 से पूर्व।

संस्था का प्राचार्य होने के नाते उक्त स्थिति से काफी परेशान एवं तनावपूर्ण स्थिति में मैं रहता था। किसी अशासकीय या उत्कृष्ट विद्यालय में भ्रमण होता तो मेरे मन में कसक रहती थी की काश मेरा भी विद्यालय ऐसा हो और कविता की ये पंक्तिया मुझे स्मरण आती थी की –

''मैने छूटपन में छीपकर पैसे बोये थे,
सोचा था पैसो का प्यारा पेड़ उगेगा।
रूपये की कलदार मधुर फसले खनकेगी।''

उक्त पंक्तियो ने साकार रूप लिया 01 जनवरी 2017 को जब हमारा विद्यालय नगर अठाना की गम्भिरी नदी के किनारे स्थानान्तरित हुआ। विद्यालय शा. उ.मा.वि. अठाना अपने डेढ़ वर्ष के कार्यकाल में निरंतर प्रगति की सौपान चढ़ता गया और आज नगर अठाना की गौरवमयी संस्था के रूप में शाला का गौरव प्राप्त है। विद्यालय ने निम्नानुसार चरणबद्ध विकास किया।

1. शाला प्रांगण – विद्यालय का स्वयं अपना 50x40 मीटर का विशाला शाला प्रांगण है, जो पूर्व में काफी उबड़–खाबड़, कटिली झाड़ियों से युक्त था। इसे नगर परिषद अठाना, शाला विकास समिति एवं शाला विकास एवं प्रबंधन समिति के विभिन्न मदो से लगभग 75 हजार राशि खर्च कर मैदान को समतल बनाया गया। इस मैदान पर शाला के छात्र–छात्रा फुटबाल, क्रिकेट, कबड्डी, खो–खो आदि खेलकूद होते

रहते है। साथ ही शाला के छात्र–छात्राओं की सहभागिता जिला स्तरीय, संभाग स्तरीय, राज्य स्तरीय खेल गतिविधियों में होने लगी है।

2. लघु वाटिका – शाला परिसर में शाला के शिक्षको, छात्र–छात्राओं, भृत्य संवर्ग आदि ने काफी मेहनत कर शाला परिसर में लघु वाटिका विकसित की है, जिसमें कई पुष्पीय पौधे, बेले, छोटे वृक्ष, गमले आदि लगे है। जो विद्यालय में आने वाले आगन्तुको को हरियाली युक्त वातावरण देखते ही प्रसन्नता होती है। लघु वाटिका का देखभाल, साफ–सफाई, पौधो को पानी पिलाना आदि कार्य शाला के छात्र–छात्राओं की एवं शिक्षको की सहभागिता पूरे मनोयोग से होती रहती है।

3. स्मार्ट क्लासेस – शाला शा.उ.मा.वि. अठाना में शाला परिसर में स्थित विभिन्न कक्षो को झोन की भीतर विभाजित किया गया है। जिसमें एकेडमिक झोन, विज्ञान झोन, प्रशासनिक झोन, पुस्तकालय झोन, क्रीड़ा झोन आदि है। अकादमिक झोन में 6 कक्षा कक्ष संचालित है, जिसमें से 4 कक्षाओं में माननीय विधायक महोदय श्री ओमप्रकाशजी सखलेचा के सक्रिय प्रयास से विक्रम सीमेन्ट खोर द्वारा 4 स्मार्ट बोर्ड विद्यालय को सप्रेम भेट किये गये है। विद्यालय के शिक्षक तथा छात्र–छात्रा द्वारा स्मार्ट बोर्ड का व्यापक एवं निरन्तर उपयोग किया जाता है। शिक्षण अधिगत को सुगम बनान में स्मार्ट बोर्ड का काफी योगदान सिद्ध हुआ है। शाला का बोर्ड परीक्षा परिणाम सत्र 2017–18 का शत–प्रतिशत रहा तथा कक्षा 12 के 25 छात्र–छात्राओं ने 75 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित कर माननीय मुख्यमंत्रीजी से लेपटाप हेतु 25000/– की राशि प्रत्येक छात्र ने प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया है।

4. जल व्यवस्था – शाला में शाला विकास निधि से स्थायी रूप स जल की समस्या का निराकरण किया गया है, जिसमें गम्भिरी नदी में ट्यूबवेल खनन करवा कर 1 हॉर्स पावर की मोटर लगभग 300 फीट गहराई में उतारा गया तथा सुव्यवस्थित पाईप लाईन बिछा कर टंकी तक पहुंचा कर जल व्यवस्था को सुचारू किया गया। इस कार्य में शाला विकास निधि से लगभग 50 हजार रूपये राशि व्यय की गई। इस प्रकार जल व्यवस्था होने से शाला प्रांगण में लगे पेड़–पौधो को वर्ष भर पर्याप्त पानी उपलब्ध रहेगा।

5. आर.ओ. वॉटर प्लान्ट – शाला में माननीय विधायक महोदय के सहयोग से लगभग 1.5 लाख रूपये राशि का सहयोग विधायक निधि से प्राप्त हुआ, जिससे शाला में आर.ओ. वाटर प्लान्ट स्थापित किया गया। जिससे शाला के छात्र–छात्रा

एवं शिक्षक महानुभवो को साफ–स्वच्छ एवं ठण्डा पानी हर समय हर मौसम में उपलब्ध रहता है तथा छात्र–छात्राएं दूषित पानी से होने वाली बिमारियों से सुरक्षित रहते है।

6. सी.सी.टी.वी. केमरे – शाला में नगरवासियो एवं जनप्रतिनिधियो के सहयोग से लगभग 60 हजार की राशि से शाला के 6 कमरो में सी.सी.टी.वी. केमरे लगाये गये है। इन सी.सी.टी.वी. केमरो से शाला के कक्षो की निरन्तर मॉनिटरिंग प्राचार्य कक्ष से प्राचार्य द्वारा की जाती है। जिससे शाला का वातावरण अनुशासनात्मक हुआ है। साथ ही शाला परिसर में लगे सी.सी.टी.वी. केमरे द्वारा समस्त गतिविधियों के उपर निगरानी रखकर शासकीय सम्पत्ति को होने वाले नुकसान से बचाया जा सकने का प्रयास किया है।

7. पुस्तकालय – शाला में शाला विकास एवं प्रबंध समिति मद से प्रतिवर्ष छात्रोपयोगी पुस्तको का एवं पत्र–पत्रिकाओं का क्रय किया जाता है। पुस्तकालय में वर्तमान में लगभग 500 पुस्तके स्टॉक में है, जो पुस्तकालय प्रभारी द्वारा नियमित रूप से छात्र–छात्राओं को वितरित की जाती है। जिससे छात्र–छात्राओं के ज्ञानार्जन में वृद्धि होती है। छात्र–छात्राएं नवीनतम घटनाएं एवं जानकारियों से अपडेट रहते है।

8. प्रयोगशाला – शाला में विज्ञान विषय को रूचिकर एवं प्रभावी बनाने की दृष्टि से रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, जीव विज्ञान की प्रयोगशालाएं नवीनतम उपकरणो से सुसज्जित है। जिसमें प्रतिवर्ष विज्ञान निधि एवं शाला विकास एवं प्रबंधन निधि मद से प्रायोगिक सामग्री का क्रय कर छात्र–छात्राओं को प्रायोगिक कार्य नियमित रूप से कराये जाते है।

उक्त सभी बिंदु पूर्व संचालित शाला की तुलना में आज शाला ने पर्याप्त प्रगति के सौपान विगत डेढ़ वर्ष में तय किये है। जिससे शाला आज उत्तम स्कूल एवं स्वच्छ स्कूल की श्रेणी में शामिल हो चुकी है। शाला की ख्याति का वाचन समय–समय पर माननीय विधायक महोदय द्वारा विभिन्न मंचो से किया गया जो हमारे लिए काफी गौरव प्रदान करता है।

शास.उ.माध्यमिक विद्यालय, अठाना

तहसील – जावद, जिला– नीमच (म.प्र.)

DISE - 2318030971 3

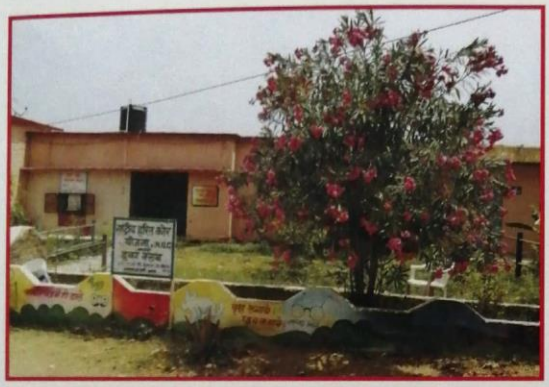

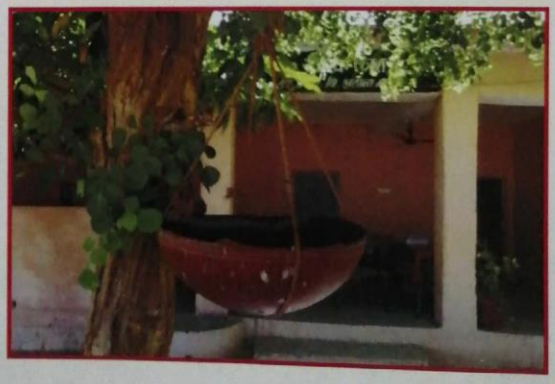

प्राचार्य
शा.उ.मा.वि. अठाना

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र

कीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अताना
अकादमिक विभाग

आगन्तुक – एक परिसर एक शाला

यह कहानी ग्राम चौबापिपलिया विकासखण्ड देवास जिला देवास की हैं, यहॉ पर स्थित हाईस्कूल चौबापिपलिया तथा माध्यमिक विद्यालय चौबापिपलिया एक परिसर में स्थित है तथा भासन निर्देशानुसार एक परिसर एक भाला अन्तर्गत भालाए आती हैं।

यह ग्राम देवास मुख्यालय से 28 किमी की दूरी पर सुदुर अंचल में स्थित हैं। ग्राम में प्राथमिक भाला/माध्यमिक भाला तथा हाईस्कूल विद्यालय संचालित हैं।

यहॉ खाती समुदाय का बाहुल्य हैं जो कि पिछड़ा–वर्ग के अंन्तर्गत आती हैं। यहॉ माध्यमिक विद्यालय मे 03 शिक्षक एवं 89 छात्र हैं तथा हाईस्कूल में 78 छात्र एवं 3 शिक्षक हैं।

हाईस्कूल में गणित तथा विज्ञान विशय के शिक्षक तथा माध्यमिक भाला में अंग्रेजी विशय के शिक्षकों का अभाव है। स्कूल में 7 कक्ष माध्यमिक भाला के हैं तथा दो कक्ष हाईस्कूल के है यहॉ अभी हाईस्कूल का पृथक से भवन नहीं है।

प्रायः छात्र गणित एवं विज्ञान विशय की कोचिंग कक्षा हेतु यहॉ से 6 कि.मी. दूर ग्राम डबलचौकी जाते हैं जब कि सामाजिक विषमताओ के कारण छात्राए इससे वंचित रह जाती है।

ग्राम में ही बसंत नाम का खेती–हर मजदूर रहता हैं, जिसकी राधा नाम की बच्ची स्कूल में कक्षा 9वीं में पढ़ती हैं राधा पढने में बहुत होशियार हैं वह कक्षा के सभी बच्चों से अधिक अंक प्राप्त करती है। राधा की मॉ नहीं हैं, पिता के रूप मे बंसत ही मॉ तथा पिता दोनो की भूमिका निभाता हैं। बंसत कक्षा 5वीं तक पढा हैं तथा पारिवारिक कारणों से आगे नहीं पढ़ पाया जिसकी कसक उसके मन में अभी तक हैं।

खेतिहर मजुदर के रूप में अल्पआय हैं ,लेकिन अपनी इकलोती बेटी को पढ़ा लिखाकर बढ़ा आदमी बनाने की ललक हैं।

एक दिन बेटी स्कूल से लोटकर गुमसुम सी बेठी थी बसंत जब घर लोटा तो हमेशा की तरह बेटी चहककर सामने नहीं आई कुछ समय पश्चात् जब बंसत से नहीं रहा गया तो उसने बेटी को बुलाकर पुछा क्या बात है यू चुपचाप क्यों है। किसी से झगड़ा हो गया क्या।

राधा बोली, नहीं किसी से झगड़ा नहीं हुआ हैं मुझे गणित और विज्ञान विशय समझ नही आ रहें हैं और स्कूल में गणित तथा विज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षक भी नहीं हैं। राधा का मन आज किसी भी काम में नहीं लग रहा था बार–बार उसे मॉ की याद सता रही थी बात बे बात उसकी ऑखो की कोरे भींग जाती थी मन में अनेक प्र न आ–जा रहे थें अपने पापा को भी कुछ बता नहीं पा रही थी पापा उसे मॉ की कमी महसूस नहीं होने देते थे फिर भी मॉ केवल मॉ ही होती हैं, राधा को मॉ की गोद, मॉ का ऑचल, मॉ की ममता सब याद आ रहे थे वह आज मॉ के ऑचल में छुपकर रोना चाहती थी।

प्राचार्य सर जिन्हे बढ़े सर कहा जाता हैं 15 अगस्त के समारोह में बताते है कि अब भाासन निर्दे ानुसार माध्यमिक विद्यालय तथा हाईस्कूल अर्थात कक्षा 6 से 10 तक एक साथ संचालित होगी इनका उपस्थिति रजिस्टर और टाईम–टेबल एक साथ बनेगें। इससे कक्षो की कमी दूर होगी क्योकि प्रधान अध्यापक का पृथक से कक्ष नहीं होगा और जिन दो कक्षों में अनुपयोगी सामान भरा हुआ हैं वह भी समिति बनाकर खारिज किया जावेगा तथा समिति इस अनुपयोगी सामान का विक्रय कर राशि स्कूल निधि में जमा करेगी जिसका उपयोग इन्ही कक्षों की साज–सज्जा में होगा इन्हें कक्षा लगाने लायक बनाया जावेंगा।

एक परिसर एक भाला योजना के तहत् कक्षा 6टीं से 10वीं तक की अध्ययन अध्यापन व्यवस्था एक साथ होना थी। संस्था के प्राचार्य महोदय ने प्रार्थना के समय सभी बच्चों कों उक्त सूचना दी। सूचना पाकर राधा का मन प्रफुल्लित हो उठा उसने सोचा कि अब माध्यमिक विद्यालय के हेड मास्टर सर उसे गणित तथा विज्ञान पढ़ायेंगे क्योकि माध्यमिक विद्यालय में पदस्थ प्रधान अध्यापक गणित विशय मे एम. एससी. है ।

राधा की खु ी अधिक समय तक नहीं रही पता चला कि हेडमास्टर सर पढ़ाने के इच्छुक नहीं हैं उनका कहना हैं कि वें फुल–प्लेस प्रधान अध्यापक है। प्राचार्य महो. का कहना हैं कि भाासन का आदे ा हैं इसका पालन करना ही होगा अन्यथा ऐसी संस्था में स्थानान्तरण होगा जहॉ पर एक परिसर एक भाला लागू नहीं है। अब राधा का बालमन इन सब उलझनों को समझने लायक नहीं था। उसे तो बारबार यहीं लग रहा था, कि हेडमास्टर सर क्यों नहीं पढ़ा रहें हैं।

राधा की दुविधा यह थी की वह कोचिंग पढ़ने दूर ग्राम नहीं जा सकती और इसके लिए उसे पैसे भी नहीं मिलगें उसे अपने पापा की मजदूरी पता थी कि कितने कम पैसे मिलते है सही कहा है कि गरीबी एक अभि ाप हैं।

इधर राधा के घर उस के मामा आते हैं, जो सेना में हैं राधा उनसे मिल कर बहुत खुश होती हैं तथा अपने स्कूल की सब बात करती हैं। अगले दिन राधा के मामा स्कूल जाकर हेडमास्टर सर से मिलते हैं, हेडमास्टर साहब पुछते हैं आप कौन **आगुन्तक** हैं वह बताते हैं कि मैं राधा का मामा हुॅ तथा वह आपके स्कूल में कक्षा 9वीं मे पढ़ती है, उसे गणित तथा विज्ञान विशय समझ नही आ रहें हैं तथा आपको आदेश मिलने पर भी आप नहीं पढ़ा रहैं है। मैं आपसे आग्रह पूर्वक यह निवेदन कर रहा हुॅ कि सेना में जब युद्व भाुरू हो जाता है तब सैनिक और सेना के तमाम अफसर एकजुट होकर भात्रु सेना पर प्रहार करते हैं वहॉ सिर्फ हाथ में हथियार और दिमाग में भात्रु पर प्रहार करना ही होता हैं वहॉ कोई छोटा–बडा नहीं होता हैं

हम लोग अपने घर–परिवार से दूर विशम परिस्थितियों में देश की रक्षा का दायित्व निभाते है और आप विद्यार्थियो को पढ़ा भी नहीं सकते। इन सब बातो का हेडमास्टर सर पर बहुत प्रभाव पढ़ता हैं। उस रात सर ठीक से सो भी नहीं पाते हैं रह–रहकर उन्हें राधा के मामा के भाब्द कान में गुंजते हैं।

मामा अगले दिन अपने गांव लोट जाते है। राधा जब स्कूल जाती हैं, तो उसे स्कूल का माहौल कुछ बदला–बदला लगता हैं। जैसे ही गणित का काल–खण्ड आता हैं हेडमास्टर सर पढ़ाने के लिए कक्षा में प्रवेश करते हैं सभी विद्यार्थी करतल ध्वनि से स्वागत करते हैं सबसे अधिक खुश राधा दिखती हैं। हेडमास्टर सर बच्चों का बताते है, कि आज से वे ही गणित तथा विज्ञान विशय पढ़ायेंगे, सर पढाना भ्रुरू करने के पूर्व राधा से पुछते है तेरे मामा कहॉ है, राधा कहती हैं वें तो अपने गांव लोट गये। सर सोचते हैं **आगुन्तक** आया और गया किन्तु मुझे समझा गया कि देश सेवा कैसे करनी हैं।

इस प्रकार एक परिसर एक भाला योजना छात्र हित में अत्यंत प्रभावी हैं।

एक परिसर एक शाला

शिक्षा में गुणवत्ता लाने हेतु गत वर्ष से ''एक परिसर एक शाला'' की अवधारणा को लागू किया गया। उपलब्ध से उपलब्धी को ओर यह एक प्रयास है जिससे शाला में भौतिक एवं मानसिक परिवर्तन हो सके। उपलब्ध संसाधनों का एकीकृत उपयोग किया जाने लगा, जिससे शाला की व्यवस्था में सुधार परिलक्षित हुआ। प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला एवं हाईस्कूल की शक्तियों एवं कमजोरियों को समझकर कार्ययोजना बनाई गई, जिससे शाला की गुणवत्ता में परिवर्तन देखा जाने लगा। जिसमें मुख्य पहलू इस प्रकार से देखे गये–

शाला में पूर्व में तीन बोर्ड लगे थे (प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला एवं हाईस्कूल) जिन्हें एक कर दिया गया एवं 'एक परिसार एक शाला' अंतर्गत दिखाया गया।

प्रार्थना सभा

प्रार्थना सभा तीन बार होती थी :– प्रथम–प्रातः पाली में, द्वितीय–माध्यमिक की दोपहर की पाली में और तीसरी हाईस्कूल की 10:30 बजे। EPES अंतर्गत शाला एक ही पाली में लगने लगी और प्रार्थना (कक्षा 1 से 10 तक) सभा भी एक होने लगी।

Composite Lab

माध्यमिक के छात्र पूर्व में कक्षा में रखी विज्ञान प्रयोग किट की अलमारी में रखी सामग्री की मदद से कक्षा में ही प्रयोग करते थे। अब स्कूल में बनी Composite Lab में जाकर प्रयोग करते हैं।

शिक्षकों की योग्यता एवं उपलब्धता अनुसार

विषयों का अध्यापन कराते हुए शिक्षक

शिक्षकों की योग्यता एवं उपलब्धता अनुसार विषयों का अध्यापन किया जाने लगा। माध्यमिक शाला में पदस्थ श्रीमती ममता चुरारिया, जो कि संस्कृत में पी.जी. है, हाईस्कूल में संस्कृत विषय का अध्यापन करा रही है, हाईस्कूल में पदस्थ श्री आर. केसोनी (अंग्रेजी के वरिष्ठ अध्यापक) कक्षा आठवीं में अंग्रेजी का अध्यापन करा रहे है, श्रीमती सीमा सिंह माध्यमिक में पदस्थ है वे प्राथमिक में पर्यावरण का अध्यापन करा रहीं है, एवं श्रीमती मीना हाशवानी (यू.डी.टी.) माध्यमिक एवं हाईस्कूल में विज्ञान प्रयोग करवा रही है।

शाला की साफ–सफाई

शाला की साफ–सफाई, पानी, बिजली एवं रखरखाव में प्राप्त राशियों का भरपूर उपयोग किया जा रहा है।

मानसिक रूप से भी सभी शिक्षक एक दूसरे का सहयोग करते हैं एवं एक ही प्लेटफार्म पर होने की अनुभूति कर पाते है। प्रार्थना सभा में सभी छात्रों एवं शिक्षकों को बोलने का मौका मिलता है, और एक साथ खड़े होने से एकता की भावना भी उत्पन्न होती है।

पूर्व स्टाफ कक्ष

शाला में दो स्टाफ कक्ष (प्राथमिक एवं माध्यमिक के शिक्षकों हेतु) थे, जिसे माध्यमिक के कार्यालय/HM कक्ष में विलय कर दिया गया, जिससे दो अतिरिक्त कक्ष मिले जिसमें कक्षायें संचालित की जा सकी और यह मुख्य वजह भी थी शाला को दो पाली में संचालित करने की। वर्तमान में शाला एक पाली में संचालित हाने से प्रशासनिक एवं अकादमिक कार्य भी सुचारू रूप से हो पा रहा है।

विलय किया गया एकीकृत स्टॉफ कक्ष

एक परिसर एक शाला

जिला– छतरपुर

शासकीय उमावि ईशानगर ''सफलता की कहानी चंदा की जुबानी''

यह कहानी शास.उ.मा.वि. ईशानगर में अध्ययनरत् रही एक पिछड़े परिवार की। चंदा का जन्म एक अहिरवार परिवार में हुआ। जन्म से ग्रामीण परिवेश में उसे व उसके परिवार को सामाजिक उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ा चंदा एक दृढ़निश्चियी तथा साहसी छात्रा है। इसने सभी परंपरागत कृतियों का विरोध कर पढ़न-पाठन को अपनी ढाल के रूप में चुना।

चंदा का जन्म 15.08.1993 को ईशानगर विकासखण्ड के ग्राम गौर में हुआ। चंदा के पिता का व्यवसाय मजदूरी था। चंदा के दो भाई व दो बहिन है। चंदा ने इन्हे भी शिक्षा देनी की मन में अलख जगाई। चंदा ने अपनी कर्मठता से भाई व बहिनों को भी शिक्षित कर लिया। चंदा ने प्राथमिक शिक्षा, शास. प्राथमिक शाला गौर से प्राप्त की। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण छात्रा को कस्तूरबा गांधी छात्रावास में प्रवेश लिया। माध्यमिक शिक्षा, शास. कन्या शाला से प्राप्त की। हायर सेकेण्डरी शिक्षा चंदा द्वारा एक परिसर एक शाला शास.उ.मा.वि. ईशानगर से ली। चंदा ने परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। चंदा का उद्देश्य लोगों की सतत् सेवा करना था। उसने सेवाभाव के कारण नर्सिंग क्षेत्र को करियर के रूप में चुनने को तय किया उसने बी. एस.सी. नर्सिग कोर्स में प्रवेश लिया। ''जहॉ चाह वहॉ राह'' को चरितार्थ करती यह छात्रा देश सेवा के साथ समाज सेवा को महत्व देती है। संस्था प्राचार्य तथा शिक्षकों

द्वारा इस छात्रा के आगे बढ़ने हेतु हर संभव मदद की गई। यह छात्रा समाज के जिस पिछड़े वर्ग से आती है। उन्हें स्वास्थ्यगत जानकारीयॉ प्रदान कर उन्हें स्वस्थ्य रखने हेतु अपनी अग्रणी भूमिका निभा रही है। समस्त ग्रामवासियों को इस छात्रा की अथक प्रयास से परिवार, गॉव एवं विद्यालय का रोशन किया। निश्चित ही चंदा अपने नाम को चरीतार्थ करते हुये लगातार आगे बढ़ रही है तथा ज्ञान का प्रकाश फैला रही है। सभी शिक्षक परिवार चंदा के उज्जवल भविष्य की कामना करते है।

शास. उ.मा.वि. किशनगढ़ ''सफलता की कहानी शिवानी की जुबानी''

यह कहानी है एक आदिवासी अचंल में निवास करने वाली होनहार छात्रा की। छतरपुर जिले के बिजावर विकासखण्ड के ग्राम किशनगढ़ में जन्मी बालिका कु.शिवानी गुप्ता ने अभावों का जीवन जीते हुये शिक्षा को सफलता की सीढ़ी बनाया। इस छात्रा का जन्म 10 अगस्त 1995 को ग्राम किशनगढ़ में हुआ। पिता एक छोटी सी दुकान का संचालन करते है जिससे परिवार का पालन-पोषण मुश्किल से हो पाता है। छात्रा की माँ कृष्णा गुप्ता गृहणी है। छात्रा ने प्राथमिक शिक्षा चिंत्राश बाल विद्या मंदिर किशनगढ़ से तथा माध्यमिक एवं उ.मा. शिक्षा शास.उ.मा.वि. किशनगढ़ से प्राप्त की है। अभावों के बाबजूद इस छात्रा ने हिम्मत नहीं हारी और पिता से आगे पढ़ाई करने की जिद ठानी। छात्रा द्वारा 12वीं परीक्षा में 84 प्रतिशत अंक अर्जित किये गये। शिवानी ने विद्यालय की वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता में हमेशा प्रथम स्थान प्राप्त किया। शिवानी ने अपने साथ-साथ अपने दोनों भाइयों की शिक्षा पर ध्यान दिया। आज एक भाई इस समय इंजिनिरिंग कर रहा है तथा दूसरा भाई ऋषभ गुप्ता सिविल सर्विसेज की तैयारी कर रहा है। छात्रा द्वारा महाविद्यालयीन शिक्षा जिला मुख्यालय से प्राप्त की। उसने बी.एस.सी. आई. टी. से स्नातक किया छतरपुर में ही रहकर सामान्यज्ञान, गणित व तार्किक क्षमता के विकास के लिये उसने मार्गदर्शन प्राप्त किया। वर्ष 2016 की सबइन्सपेक्टर परीक्षा में शिवानी को सफलता प्राप्त हुई और पुलिस सेवा को ज्वाइन किया। शिवानी वर्तमान में जिला पुलिस कोतवाली दमोह में सबइन्सपेक्टर के पद पर पदस्थ होकर परिवार, गाँव एवं विद्यालय का नाम रोशन कर रही है। उसके उज्जवल भविष्य हेतु समस्त शिक्षक परिवार ह्रदय से कामना करता है। शिवानी को निडरता व अदम्य साहस हेतु पुरुस्कृत किया जा चुका है। छात्रा का उद्देश्य राष्ट्र भक्ति व जनसेवा है।

Govt. HS Civil Line, Datia

(Integrated school 6th to 10th)

The Concept of EPES has given a new dimension to the management of Govt. School. At First it seemed difficult to understand the need of this massive change. Any concept when it flows downwards is no doubt a result of many processing discussions and deep test. Many presentation meeting at state, District and block level helped a lot to understand the concept of EPES. This concept was introduced first time. By the letter of MP Govt. School Education department letter no. F-19/2018 /20-2, Bhopal Dated 05-09-2018. After this letter many things became crystal clear.

Now i would like to explain our school was benefitted by this idea. In our school campus two schools were running as an individual unit since long. One-Middle School and one High School. The School was being run in two shifts because of lack of space. Introduction of EPES turned things on. We were guided with the following basic concept to introduce in our school in all the meeting held at district and block level for principal and Head Master. The theme of the concept of EPES how far i understood was "Maximum Utilization of available resources in our school campus".

1. There should be only one administrative head for all schools running in one campus.
2. One attendance register for all teachers teaching in one campus.
3. One time-table for all classes running in same campus.
4. One staff room for all teachers in same campus.
5. One SMDC/SMC for functioning of the school.
6. One work Plan.
7. One account.
8. Many other small and big things were explained during the training session for the successful implementation of EPES.

Govt. HS Civil Line and Govt. MS No.1 datia were officially joined in one School Under EPES by the order of District Collector no.-Siksha/EPES/2018-19/183, Datia Dated 14-01-19.

As i have already mentioned middle and high school were running in two shifts since long due to lack of space but as soon as the idea of EPES launched practically thing begin to change.

First of all, as ours was the High school, I was given the responsibility to hold on the charge of the schools and re arranged things to give new shape to the school and prove that EPES is the better option to make maximum utilization of available resources. My self and HM had meetings and after that staff was also involved in general discussion to make action smooth and without any confrontation, without hurting feelings of each other. I assured HM and the staff to feel free in working with me as a team and this is how we started our journey to change and merge to different running school in one unit.

- Previously when the schools were in shifts, there were many things those i was implement were like visions. Now EPES make things easier. Now every possible step was supposed to be taken to make things run in best and favorable way.
- The school should run in one shift. I believe that, no school can perform best if it is divided in shifts and i have reasons too for my concept. The biggest reason is lack of time.
- As one shift starts from 7 AM which is practically difficult. First because of the distance that child has to cover from his/her village, secondly the climatic condition always play an important role, especially winter and rainy season.
- Same problem are faced by the children coming in the after noon shift. We cn not retain late in the evening especially Girls in winter and rainy seasons.
- The second action was to make space for the classroom. Thus, we shifted the two staffroom in to one. Two offices in to one principal room. Soon there were enough rooms for the classes.
- The new Name of our school was –

Govt. HS Civil Line, Datia (Integrated school 6th to 10th)

Now our school runs classes from 6th to 10th.

- There is one common signature register for all teachers.
- Our New Time table is for class-6th to class 10th.
- All teachers are utilized for whole school according to their qualification, capabilities and qualities.
- We have framed the new SMDC including all teachers.
- Now the school has one account.
- We have prepared our annual plan including the available resources of both schools, with the faith that every student will be benefitted by the policy.
- All things are set for the present academic year. Hope it will give good result.

I am sure that the concept Of EPES will show a positive result. The foremost advantage that i realize about our school is that now we have sufficient teaching staff. The total staff and Enrollment of the school is great:-

Total No. staff in our integrated school	26
Total No. staff in our integrated school	743

To sum up I would like to say when we unite two schools, it is not, only a physical matter it is an emotional matter too. So, I would say "Handle with Care".

(Dr. Anita Sharma)
Principal
Govt. HS Civil Line, Datia